

धर्मरत्न वज्रामय सुख श्री महाबिहार II-325

जको

न	क	ति
डि	म	ती
ने	कु	शा

ॐ नमो ब्रह्मसत्वाय ॥ अथ मद्यतमधु फलान्नप्राशनविधिमाह ॥ हापां स्थापनाया
ये कलसशान्तिमादिदिक्कलपुस्तकसिद्धिं गोशामकुमारिभुजा नकेभुजा
मामकिअंतवाही कुक्षिहंजपिधाता स्थापनाया नाव हापां सूर्यार्घ्याय निवा
मेगुरुमराड लदने पंचगव्ये शाय सिद्धये वाके उद्यातात्मादि ॥ महनिफये धन
जनमानयानमराड थिले कितने मराड तविमर्जनयाके ॥ धन नंखवीले पिघालु पुन

कलछे योगरोशपुजा होय ॥ धनत्रिसमाधियाय ॥ त्रिसमाधिधुने ॥ कलशसंगतिमापुस्त
कसिद्धिं गोशामनकेभुजामनथापिनिमाधुतिविधिये पुजाधुनकाव ॥ मवागीडी अजि
मांमोनुकामचालमोयाकाये मचाय नधनंदनके ॥ देवपुजा मायधुनकाव धनकुले
शदीदीवी विये वाके ॥ ॐ ह्रीं आचमनं ॥ आदि ॥ स्नानवाये ॥ ॐ ईं डाये स्नानात्मादि ॥ ॐ
करशुक्रशुक्रादि ॥ खखवादि ॥ ॐ आ ह्रीं हो उवागी मचक्रवर्तियिमांतक प्रजा

जंते
२

ज्ञातकपरमांतक विघ्नांतक अचतर्तर्कराजनीतदराः महाबलेभ्यः सपरिवारिभ्य ईदं धर्तिगंधपुष्प
धूपदीपाभतददाम्यहंसतेचागभ्यः सपरिवारेभ्यः सपरिवारंशीघ्रमिदं वलिगुरुं तु वा दंतु पिवंतु
जः कूं वं होः सत्प्रांममसर्वसत्वांच शांतिं स्वर्तिं पुष्टिं कुरु २ रक्षां वर्तिगुप्तिं कुरु २ हूं २ फट् २ वज्र
धर आज्ञापयति स्वाहा ॥ ॐ आः कूं होः अस्मादिभ्युनैः सते वायुयनाग्निमसुडेधरेऽत्रायसेभ्य ईदं
वलिगुरुं तु वा दंतु पिवंतु जः कूं वं होः सत्प्रांममसर्वसत्वांच शांतिं पुष्टिं रक्षां वर्तिगुप्तिं कुरु २

हूं २ फट् २ स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते आर्ये गृहमाह काये ॥ सर्वगृहनक्षेत्रादिर्भयनाशिनी सर्वदेवता
गयमादिर्वायुपुशमजिराजचौरादिभयविधं मिनी भगवति गृहमाह के सर्वगृहनक्षेत्रादिभिः
शीघ्रं आगच्छ २ वातानां ॥ १२ ३ ईदं वलिगुरुं २ मम सर्वविघ्नान्हर २ शांतिं पुष्टिं कुरु २ हूं २ फट् २
वर्षशतं पश्यंतु सिद्धिं मंत्रपदेभ्यः स्वाहा ॥ वलिसंछाये हायके ॥ ॐ यक्षगृहेऽमशाने वा पर्वते क
न्दले गृहे वा मघार्धे पथे भेदे धूम्रांगारे निशेधतः ॥ भांजनमथ जगते भौमौ मांतगाश्च विशेषतः ॥

जंको.
२

रुद्रोऽमहोऽदेवदत्तसमाश्रितः॥ रुद्रक एतविभक्तनन्दातीनुविनायका॥ त्वमुपगच्छ
रविभक्तिउमादेवीनुसंभवा॥ जयाकवि जयाचैव अजिता अपराजिता भडकाती महाकाती
स्थुतकानि तु योगिनी॥ ईश्वर निदुष्टी घोरि तन्त्र कीचिदशेश्वरी कां वो जी दी पी यो सं न्या
ग्रामा वक्षित योगिनी॥ घोररूपा महा रूपा दृष्ट रूपा कपालिनी कपालमात्या मा मि मारव हांगा
अमर्हि ईकारु रुद्र ताप रुरु ता भु लथा॥ पंच अकिनी स मा स त त्व सर्व कामानु मा स न यो

ममराडतमहारागी वज्रेश्वरी प्रभुस्तथा॥ तथागत महाकायतिरंजन योग संस्थिता इदं वज्रेश्वरी
आज्ञा आवाप सर्व सत्त्वानां ईश्वर कंधन २ व २ वं धन २ रव २ रवा दन २ सर्व उष्ट्र पुष्ट हान रुद्रन २ धा
तय रुद्रान पते यज्ञ मानस्य यथा ते मितिक रुद्र प्रदुस्त्वाहा॥ क्रमन विधि धेव ति पूजा॥ मा ज
को सुति माय भन पी ठादि पूजा धन मो वा त स्वये ह या व त्वत्तिक सतये गु रु मराड ह हन के
मन पूजा या ये धन मराड त वि सं ज न मा य म वा या गु त्वा न छ को द त स्पे दि वा धि वा श न॥ उ त्तो.

अंको
४

शिष्येतात्मानं मित्यादि ॥ पंचगवेविये ॥ ॐ नन्दाभडा जयामो म्याकी पृता श्रुत्यादि ॥ ॥ धनता
नचा मत फं तो ये वा के ॥ निरां जन छोये ॥ ये धर्मा सि फ न लुये ॥ धन भे लु लन जं का स्व सि पा
के न दि ग तो स्य विये ॥ वाको ॥ ॐ दि वे वा स से स्वा हा ॥ धन शंख लं ख न हा स्ये ॥ घेल क ति शो ध
न वा के ॥ ॐ आः ह्य त म धु शो ध ने स्वा हा ॥ धन ह्य त म धु वं ग ती मिं ह ल वो न य ॥ धन चं ड सूर्य
ई ह दे व ता दि दि व ति ध ने या त वो ष त स्ये पं चो फ न र पू ज ॥ सु ति ॥ ॐ सूर्या य दे वा य त्या दि ॥

ॐ च त म से दे वा य न मो सु ते ॥ ॐ नि रा फा रि रा लं भ मि त्या दि ॥ ॐ जन नी सर्व पु द्वा ना त्मा दि ॥
धन च त सूर्य ई ह दे व ता दि दि व ति स ह्य त म धु नो घ्रा या मो धा या त शं ख लं ख न नो चा य का
ह्य त म धु म चा या त न के प्रा रा दि मं च वा यु प्र मा वं न के धन का क लं ख छो ये ॥ धन फू ल प्र श
न या य मि त्रिं शं ख लं ख न हा स्ये शो ध न मा य वा क या ॥ ॐ आः सूर्य फू ल शो ध ने स्वा हा ॥ मि त्रिं
दि ग तो बा न म चा या त विये ॥ हा या बा र्धे च त सूर्य ई ह दे व ता दि दि व ति स छो ये ॥ नो न या त

नोवायेके॥ॐ ऊँ आम्बमनेमित्यादि॥ नंकातआदिफुल्लज्जाणादिपंचपायप्रमान
नयायातनकेवाके॥ॐ आसमाधिफुरोत्याहा॥ॐ जैत्वाहा॥ मन्त्रिअर्दिफुल्लमूल
नंदेनोचायेके॥ लिप्तिमांयातावियेको॥ तस्मेकलखछोये॥ धनत्यस्तियाकेन संत्यजन
रवनहास्यंपातजंकोलांदिगोस्वभवायातयियेजंकोननर्फिकेदिशामेत्याहा॥ ति
साहेनेतयस्वानकायके॥ धननिमानतियके॥ॐ सर्वाभरणभुषणेत्वाहा॥ धनन

के भुजा ह्या के शंख तंख हास्यं शोधन वान्के ॥ ॐ नमः सर्व बुद्ध बोधिसत्त्वार्त्त ज्ञान वली
नी स्वाहा ॥ ॐ आः हूं धा ॥ धन आगत वीतया ॥ चंद्र सूर्य ईश्वर देवता दीदी वलिवो ४
तस्ये पंचोपचार प्रजायाना धर्ते गोष्ठये ॥ धन यातनो वायकं अन्न प्राशन मातंके ॥ थ
घेज सावदा नु कास्यं चिपन धिये के वान्के ॥ ॐ आराण्य वायवे नमः ॥ अंगुलानन के ॥
ॐ अयाण्य वायवे नमः ॥ इधुलान के ॥ ॐ समाना पवायवे नमः ॥ चो लानन के ॥ ॐ

जंको
६

दानायवायवेनमः। चीकीपचीनके। उँव्यानायवायवेनमः। लानाचचिननके॥ ॥
उँआः वज्रा मृतं हूँ। धृष्टोतंतोनके॥ हाकनंभ्यापनिनंसकतांकायावतकेपेकनके
बाके॥ उँदिद्यानसमाभीध्यानपीननेत्याहामोविर्को। उँआः चमनप्रतीष्ट्याह॥
धनथाभुष्टरेविदेष्टोयवो१ तत्पेकलखद्योयेवप्रयकेतंरवंहायाके। नोसतावि
येधनमचायातमोदसत्त्वानमालानहिने॥ जगकोचजंकोकोरवावियो॥ पंचसुगंध

नंतिचेके॥ कलशाभिमेकवियेः येधर्मातिफलये॥ उप्रतिष्ठितचञ्चेत्वाहा॥ वज्रंमो
दसथियेके॥ उप्रतिदेष्टातयाधौमगंविये॥ मुखभुद्धिविये॥ मचायाता॥ धनजजमा
ननंमराडलंधियेकेत्त्वानवोयेसकस्यानंकिगवियेतिने॥ धनमराडतविसर्जनधनकु
मोली॥ मगंआदिअंतवाहीलंधिधातामेतंतयाकुमारएजाष्टोये॥ हीहीवतीछा
येदिहीवतीतयेकछोयसकतयातंसिहृतियकेआदिवाहीहीएउसमयेकायेस

समयाचक्रधुने विविमर्जनवलितयकतछोयेथनकोलाधुयायधुनकावधौसगंत्वस
गंकिमेदेष्टालंतयावियो॥थनगनचक्रजाधुयायथननचागामामयातथास
हय्यवकनकेगतकावगुकककेगुधुमेंतिगुरुआदिनोचायकेवपुकेकतंरवजे
येनसदाकायमुखपुदिकायेस्वानकोकाये॥इतिजंकोक्रियाफनप्राप्तवि
विसमाप्तपुत्रभूमि॥

लोकेकलोकनरविगाह॥जससमाको॥पुर्णकलगा॥विभत्ता३२पुर्णज्वलंतमाको
सूर्यार्घ्याया॥पुजासंकल्पगुरुमरातदने॥पंचगव्येष्टाये॥सिद्धतय॥महनीक्ये॥मरा
विसर्जनयाये॥समाधिदनेधुनेवं॥कलशआदिमामकिअंतलंपिचाधातामेतसगं
भीमुखमतकमध्येपुजायाया॥थनयतअधिष्ठानजज्ञहोमयाये॥देवपुजाधुनेवंकुमा
-पुजाधुनेवं॥लोकिक्किपिराधयेमजानथेपुजायाये॥थनकोपौकापाताकाचौक

लोक

सालकायादेवने कलावये कशाक्येके गुभाजुं प्रकृतं प्रयावनाधुप. मतनं डयेके: तरुनं स्वचाड
यका गतिविषये. यावत. सताक्षरे दीसर्जनपिराडुयक तज्येपिषा तरुनं जिहावया भेपुर्गाड
तियाये जजमानमराडतथीयेके लुतिविस्मर्जन संगतयेमहृया छये चित्तपुजाया यतर्पनया ना
ऊमापि पुजा छेयो। आदिकाय ऊमारिया पुसाइ स्वांकाये वाही लही ये लुमने काये. विस्मर्जन
समपुर्णा इति याये के लाभुमधिभुस्यावतिभुने उतिं छेपो लयाये काकातया भोजनया यधौतयेसी

॥ साधन अग्रितये ने मिले कलं बछेये ॥ वधिले न सतातये ॥ धुनिभुने वं लोकत (मातथायके
मुखमनः समंधो यात्र गुरुमराडत समाधि। आदि अन्न त्याउध थपिं. मुलपात्र देवयाना पुजायाये ॥ गु
रुमराडत विस्मर्जन. सिहतयमहनी फये. आदिकाये. समाधीयाये ॥ गित प्रथमे मरु अनीत. स्तुवार्त्तनमरु
उगाभरागा ॥ धन देवपुजाधने बलोकनर पिराथये ॥ मायां जालचवाहते. पामक छोर्ये पिराड विस्मर्जन
उयेकत छेयो ॥ भिन्नपुजा ॥ गीतत्रीभुन ज्वलित मराडतथीते. सताक्षर विस्मर्जन थन दिगुममेकाये

लोचनं तं निवास्य को ये विस्मरन् ॥ धनं जायते ते ये उर्ध्वभाग काये भन्ति पुजाया ये ये उत स वा के हो ये धन जाये
द्विष्ये आसिर्बद्धः श्रेयो भोजयाये ॥ धनं थकादि छ ह्यस्या नो सिधा ॥ पुन पुन थकातीनि पात्र पुजाया
ये गित को ज्ञा इहा ते गुह्यं प्रव स क न या तं पुजाया ये मोहनी को काये देव्या त द्याये सकल यंति
ये पुन पात्र लक्ष्मी त ह ठा भरन तिये न्ना थुति धने वं धोः सि सा प्र त तय अय जा जी भाग वने
धने वं चींता मनी काये अये जा जुये चिंता मनि वो स ते ये अये ता त्वने समाधि वौ गुह्यं मराड वो हो ये

गीत चराड गुम सा धन नो सिधे अर्ध भाग काय कलं र व व्रये धने गु पुजा या ये गीत धनां गारि
समभिधाना अर्ध भाग ह्पा हो ये लीपा कलं र व व्रये व पु ये नो सला तये धुली धं का पा वो तये
चीपन थिये ता द्वाय गीत गज जीत हले अमा मराड ले थाले नृते या ये म्वा र्ध विनी हले श्लोक
उज्जं बोले ये जंगमा चाप द पे द स पत्र तये ताली ह्वाये नो सी ले न स न ये त्या को का ये पा म
म कं त व ह्वाये वेदा विर्ये लोकोत्तर विधिस मा प्र मृ भु म ह्म ॥ १३० ॥ ॥ ॥

यो स भेहूँ। आत्मा से मेहूँ। भावना॥ तत सर्व हृदये सुख्य महालोपीरुष्टि न पिंगो द्वे के मि कं काल
१० माला पतं विनी ड्डा करत वदनी शिरसि छत्रावतं विनी॥ त्रि ह मित वदता धु प्रवराणा
त्रिनेत्रा मष्टा दश भूजा भिम मुनि धु मांगारि भवति भावयेत्॥ ॐ आकर्षणी रूँ॥ ॐ धु
मांगारि प्रव मत्कारा यमाद्यादि अपो आव मन प्रो भ मन प्र नि ह स्या हा॥ त्वान बोधे॥ ॐ धु
मांगारी ये स्वाहा॥ योगां वरी ये स्वाहा॥ ॐ ह पु क सिय स्वाहा॥ ॐ हो ज मिं डि म स्वाहा

ॐ ऊँ चंचं गाय स्वाहा॥ ह्यवेने॥ ॐ घो रिये घ्री स्वाहा॥ ॐ हृष्टि त्रिये घ्री स्वाहा॥ मां सिये घ्री स्वाहा
ज वसा॥ ॐ उ ग्री य क रु २ स्वाहा॥ ॐ ज्व त तो ये क रु २ स्वाहा॥ ॐ वि भ त्सी ये क रु २ स्वाहा॥ ध व मे॥
ॐ का पाली ये वर्त नी २ स्वाहा॥ ॐ व जी ये वर्त नी स्वाहा॥ ॐ कुं मी ये वर्त नी २ स्वाहा॥ र व व स॥
पंचो प वार पुजा लम्पा॥ ॐ ह होः ह स्वाहा॥ ॐ धु स्वाहा॥ ॐ क रु २ स्वाहा॥ ॐ वर्त नी २ स्वाहा
योगां वरुं॥ ॐ योगां वरि हूँ॥ तोत्र॥ हूँ कारं प र्म देवं हूँ कारं भृष्टि भावनं॥ हूँ का हं प्र भ वे ह

[illegible]

त्वरिदमिराप्रभमभजेनस्वहृत्तंस्वद्वंगुडिवियनना नामघापित्तसंख्यंजितोयेनविबीधलीमम
 परापात्रंचतुर्थेनअभक्षेजांकितचिन्हकृतसवतिमहासंख्यापंचमेनस्वद्वंसंख्येनांकुरावाप्र
 थमेभजेनकंकानुनमाहारचिनश्चतुर्थेनयत्तविद्याननासिकाभ्यांअमृतजलविधीमंधेत
 त्रियेनपरसुंचतुर्थेनजाताकुतोक्तानांपंचमेनहृदिरयत्तपुर्वापात्रंसह्येनचतुर्जनीपातंमनुष्य
 चर्मोक्तंनेवास्यद्योतीरुपाजवलितमहकंसमंततो ज्ञात्वामादिराजितोक्तंस्वभूतंधूमंगा

१२
ॐ म दिभगवति स इति कानां भावयेत् ॥ स्नान कलं कुंदे वने नमालं रवं ननु य ॥ ॐ आचमनं प्रति ह
साहा ॥ नृपायाथे भावना स्नान पोयो ॥ पं. तां. सु. नि. ॥ तर्पना ॥ वलि मंत्र ॥ ॐ सुवि सुद्वर्म अ
आ ॐ अस्वाहा ॥ ॐ हिलि २ फुलि २ महा फुलि फे फो फु स्वाहा ॥ ॐ क ह २ कर्त्त लि सिद्धि
धि २ मशान वा मिनी प्रेत मूषि चराड कराती रुधीर पित्रे समया २ भोगां वली कि लि २ रावे २
पितृवन मध्ये भूज ह २ भ भमे २ मिग्र ह २ मगरा इति धमां गालि चराड कलालि ति स्थितिकु

ॐ नृगृह २ सर्व इष्टान भव २ न २ द २ पच २ फु फे फो फु स्वाहा ॥ पुष्पादि पूजा ॥ स्नान
ने ॥ नमो स्तुते भोगा धिय सत्त्व मोचकं नमो स्तुते संसार राय मो हृदय क नमो स्तुते सर्वात्मक य
भावक नमो स्तुते नमो मे हंसदा ॥ हरि रम कुत कि रति मनि भा सुर नरा गंग गांध सुनिर्विक
पिथिकं शोक ठं देह धरुं ॥ चाति संस्तरन सचा रिण प्रकत कल गुगं च हरि वज्र मत्व पद
मेध पद मपदं ॥ सता भरा ॥ ॐ वज्र पुष्ये हो ॥ ॐ सर्व मुडामे डि डि क ह क व चे नवं ॥ अका

यो.स

१४

रेखधत्पादि॥पिर्मजनरसाविसंकलंकछोये॥इतिधुमांगारिपुजविधिसमाप्तम्॥शुभ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय॥धनं प्रेतवर्तिविये॥हापां पोतासनं वलिचिह्नोये॥हापां फं
१ जाकिथु जाये प्रेतया मूर्तिज्यायके भसपायके तुतिनेपनके जवला हातिननया खड्ग जो
नके खवला हातिनपासजोनके थनंतिमिषा छुचके हथमिवाकौनं मनु छुचके संख्या

नै छुये लाभानं घाथयुये स्वातनं स छुये जवतु अंतु गुन्पाया च छुये खेग्व १ घाथ सतये
हनं स्वातनं स सहाये १ हाऊका पतनं फाये के॥निलगो १ सो सत सति हतिच के सति
मलाशतया हि जवला हातस खवला हातस थ जवतु निस डड खवदुति सलख ककले
समे याता ता देकातया॥थापन गरुश भहा काल कलश सगं भोमत सपु गु रुमराड
ल समाधी वली प्रेतवलि दधु स पात वली पान पनं ज्यु हनं जिउ पात वली नं डयकात

पु. व.
१५

ये॥ हापां पुजा भत जपे गुह्य मण्डल दत्ते पंचगव्ये स्नाये स्नानत यके मोहनी फये किनेने मण्डल
विसर्जन समाधीयाये कनडा संगं मतस फु पुजा देव पूजा प्रतिमरा जंत्र तया कि रतता
ये विधी भे पुजा ये धर्मा॥ धनवती माता फ को बोना पातवती ये॥ क्रमथे पुजा ये धर्मा
धुती धने वं प्रेतवती पुजा याये धुप धना जाप याये॥ ॐ अगती सुया गती गच्छं तु रू रू फ
दृशवाहा॥ धुप धाना॥ ॐ तत्र दक्षिण स्थां दिशि प्रेताधीपती जन्म राजा महा वमा॥ कृष्ण वर्णा

महावीरं त्रीमुखं छुजां जमदराधारि मीहिरासन संस्थितां आः पाः पुः ॥ स्वां बोये॥ ॐ ह
क्षीणोधीपती नमस्वाहा॥ प्रेताधीपती नमस्वाहा॥ कृष्णवर्णाय नमस्वाहा॥ जमदराधार
यस्वाहा॥ पासधरा ये स्वाहा॥ सर्वप्रेताधीपतये स्वाहा॥ अगती दोष भेदना ये स्वाहा॥ सर्वमा
रुप्रेतभये प्रसन्ना ये स्वाहा॥ युः एतुः॥ कृष्णवर्ण महाक्रोधं वज्रा मुहकतर्जनी तर्जनी
पाशधरं चैव जमराजनमस्तुते॥ तर्पणं॥ वली॥ ॐ ह्रीं नै सर्वप्रेताधीपती यमव्यभयदो

त्वगीपिदासांतीर्थे इदं वलीगृह २ त्वरत्वादी २ उं ओं कूं फ स्वाहा ॥ धनप्रेतपुत्रा जपधु
पतिरंजनमाद्यो ॥ आः पाः पुः व्यः ॥ त्वानवोय ॥ उं अस्मत्कुले मृताये स्वाहा ॥ उं अगतीये
स्वाहा ॥ मातां महकुले स्वाहा ॥ उं सर्वप्रेतये स्वाहा ॥ उं बंधुवर्गकुले स्वाहा ॥ उं जातदंदा
यगर्भापतीपादिनाये स्वाहा ॥ उं अग्निदग्धास्यश्चरौरहताये स्वाहा ॥ सिंह व्याघ्र हताये आः
त्मापनाये स्वाहा ॥ अने दत्तरिक्षुधाट्ट्याभूतप्रेतपिशचाये स्वाहा ॥ रौखश्चप्रेतः

लोकगताये स्वाहा ॥ नरके पुनरीर्षिषु पशुजने नो गताये स्वाहा ॥ दिव्ये नरीश्वरभूमि स्थापितशेषा
धवाये स्वाहा ॥ पितवशमृताये च मातृवंसा मृताय गुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ वक्ष्ये त्वेतां ॥ आत्मा गर्भा
श्च ज्ञाता ज्ञातिये स्वाहा ॥ पुजाता म्यास्तुती ॥ उन्नीतये तीर्थे कपे तदेवाशुरा नरा उतिर्गर्भ
यकांता रं तं प्रेतं नमाम्यहं ॥ यतिविये ॥ प्रेतवचरिताकारं प्रेतभयानाशये जजमानस्य
आयुरारोग्यहेतुर्व्युत्पन्नसंप्राप्तार्थं सर्वप्रेतभयनीवारणार्थं इदं वस्तु ॥ मये मांशदधी

देव
७

शेखरैर्वाष्पकरनसहितये अगती दोषसार्थे ॥ ॐ आ हूं कूं ॥ २ ॥ स्याह ॥ पाचनी प्रेतवतीनामं
काये हायेके ॥ ऐकहसेत्यादि ॥ हकुमये पुजा हकुमिह हकुजजमका हकुमां शस्त्रे
ना छेधः हकुइता ॥ येधर्मा ॥ पशुपूजा ॥ सनाहितये ॥ मराडलथिले ॥ त्वानवोयो ॥ किनने
ॐ अखलसमपयं नो ॥ देवर्षिपितृयानवायक चित्तमन्त्रये मया दत्तामृतयत्तु तद्गीतायारत
सर्वमजपेनत्वावयिमु कतास्यपितृलस्यनदिनप्रेतस्यतस्यमहात् करजवापिमवि श्मे ना

नप्रेतामिलादिवाताथयशिरसि मूक्तयेतीर्थमर्जदि अनास्थितश्चादिगंधाधरतुं प्रेतनमा
न्यहं ॥ सेर्मापन ॥ सनाशेर ॥ मराडलविर्जन ॥ मगंतये ॥ गुरुपुजादछीना ॥ सिं हतिये
आदिसमये चक्रधनेचं ॥ पंजां घं तुनिमराडल वि सज्जन ॥ फलश मरापातालब्रहा
ये ॥ सनाशेरवोनापातवली प्रेतवलीवी शर्जन ॥ हापापातवली पूर्वनिस्सं प्रेगुदि
सासं थलापुशछेये नजमानपनी वनंती पाप्रेतवली दछीनदिसास पुसी सनयेक

प्रेव
१८

लछोये जजमानपनी स्वनं कितन काछोये ॥ वलीवी माथा मचों एछो था वली विषाल भुस
तये कलछोये प्रेत वली तनं सव नाग लन लिहवये मते क मेगुलनं ही लावये मलन फ
छितात उः अविद्या चोंगु जल भूमि विद्या उगु था संतभ्य मा लध पथ नाता रंतं गी किरनं
ताये उ समये काये गराचक्र भोजन याया ॥ इति प्रेत वली विधिसमाप्तं उभम् ॥ ॥

ॐ नमः श्री वज्र सत्वाया वाधातये प्रायश्चित्त वनके ॥ ॥ हापां सूर्य एतमस्कार्या के १२ की गवतनं
संनमस्कार्या तके ॥ ॥ थनं लिपोतासन चार पदं चोया वरुक्त चन्दन था भुस सूर्य विन्नु चोया
वथा पके ॥ सिह मूह स्कंधं तथा पनायाये ॥ थन गुरु मस डंके ॥ थि लिधन काठी मनी सिह मूह स्कं
पूजाया तके तनो सप्तमी कारयेत् ॥ ॥ ॐ वज्र ते वे सु ते वे हूं स्वाहा ॥ मराट सस्वान वोये के ॥ ॥
ॐ वज्र दिवा कर दो चनाय वज्र पुष्पं प्रति हूं स्वाहा ॥ द्युस ॥ ॐ आदिताय वज्र पुष्पं प्रति हूं स्वाहा ॥

वा.वे.
१६

हवने॥ॐ नमः सूर्याय वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ एवम॥ॐ आः स्कन्दाय वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ धवने॥
ॐ आः नीलाय वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ जवसा॥ धृतिदथुमराडतसा॥ॐ आः रसाज्ञाय वज्रपुष्पं प्रति ह्र
स्वाहा॥ पूर्वे॥ॐ आः तोहिताये वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ दक्षिणे॥ॐ आः तोहिनेय वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा
पश्चिमे॥ॐ आः वाचस्पतेय वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ उत्तरे॥ॐ आः शनिश्चरये वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा
ॐ आः भार्गवे वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ आग्ने॥ॐ नैऋते॥ॐ आः राहवे वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ वायुवे॥

ॐ आः केतवे वज्रपुष्पं प्रति ह्रस्वाहा॥ ईशाने॥ धृतिदथुमराडतसा॥ ॥ धन अष्टविंशतिनक्षत्रवो
ये ह सफे शेतं॥ॐ कृतिकाय स्वाहा॥ॐ रोहिण्ये स्वाहा॥ॐ मृगशिराय स्वाहा॥ॐ आश्लेषाय स्वाहा॥
ॐ पुनर्वसवे स्वाहा॥ॐ पुष्याय स्वाहा॥ॐ अश्लेषाय स्वाहा॥ ७॥ धृते पूर्वस॥ॐ मघाया स्वाहा॥ॐ
पूर्वफाल्गुणाय स्वाहा॥ॐ उत्तरफाल्गुणाय स्वाहा॥ॐ हस्ताय स्वाहा॥ॐ चित्राय स्वाहा॥ॐ स्वातीये स्वाहा॥
ॐ विशाखाय स्वाहा॥ ७॥ दक्षिणे॥ॐ अनुराधाय स्वाहा॥ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा॥ॐ मूलाय स्वाहा॥ॐ पूर्वा

वा.वे.
२०

आययेत्वाहा॥ॐ उनायायेत्वाहा॥ॐ अभिजितेत्वाहा॥ॐ अवरगायत्वाहा॥ॐ पश्चिमे॥ॐ
निष्ठायेत्वाहा॥ॐ शतभिषायेत्वाहा॥ॐ पूर्वभाडेवत्वाहा॥ॐ उत्तरभक्षयेत्वाहा॥ॐ रेपायेत्वा
हा॥ॐ अभिरोयेत्वाहा॥ॐ भरुगेयेत्वाहा॥ॐ उत्तरे॥ ॥ धनंतिद्वादशराशिर्नवोये॥ॐ मेघरा
ययेत्वाहा॥पूर्व॥ॐ ह्यमराययेत्वाहा॥दक्षिणे॥ॐ मिथुनराशयेत्वाहा॥पश्चिमे॥ॐ कर्करा
शयेत्वाहा॥उत्तरे॥ॐ सिंहराशयेत्वाहा॥आग्ने॥ॐ कन्याराशयेत्वाहा॥नैऋते॥ॐ तुलास

येत्वाहा॥वायुवे॥ॐ विद्यराशयेत्वाहा॥ईशाने॥ॐ धनुराशयेत्वाहा॥पूर्व॥ॐ मकराशयेत्वा
हा॥दक्षिणे॥ॐ कुम्भराशयेत्वाहा॥पश्चिमे॥ॐ मीनराशियेत्वाहा॥उत्तरे॥ ॥ तद्वहि॥ईडा
दिदशलोकपानेवोये॥ॐ ईडायत्वाहा॥पूर्व॥ॐ यमायत्वाहा॥दक्षिणे॥ॐ वरुणायत्वाहा
॥पश्चिमे॥ॐ कुबेलायेत्वाहा॥उत्तरे॥ॐ अग्रेयेत्वाहा॥आग्ने॥ॐ नैऋतेत्वाहा॥नैऋते॥ॐ वा
यवेत्वाहा॥वायुवे॥ॐ ईशानायत्वाहा॥ईशाने॥ॐ उरुवहसरेभ्यस्वाहा॥धवने॥ॐ अर्ध

वन्दे.
२१

पृथिव्यैस्वाहा॥कोने॥ ॥थनंतिस्वानक्ष्णोत्तस्यैभामना॥थतिधुनकाअर्घयातके॥संखसं;
सूवरुसाइउताय॥असेतद्वाफोस्वानतस्परववअंगुलानकोतस्यैषभुसहायेके॥वाके॥उं
नमोभगवतेआदित्यायकाश्यपगोत्रायआदित्यगर्भसंभूतायकालिगदेशोद्भवायअरुण
सहितायअवतरभगवन्मनुष्याणांहितायेककोटनपद्मरागबंधककुशुमशहृशाय
रक्तवासपुष्परक्तगंधर्वयज्ञोपवीतप्रयायनुरागस्थसमाहृजयेदेवदानवकुम्भा

राडाकिन्नरितेनसहितायअवतरभगवन्मनुष्याणांहितायईदंग्रहमण्डलमथे
अनुप्रविश्यइदंअक्षतगंधपुष्पधूपदीपोपहारवतिचप्रतिगृह्यत२नमोसुतेयस्यरु
यतेनस्यपरिकरोद्भवशान्तिंपुष्टिकुरुक्षत्रियजन्मनेतस्मैॐदिवाकरतोचनायआ
दित्यायअर्घ्यपुनिछस्वाहा॥ ॥संखसंयचोपचारपूजा॥किंभवतेनेकेस्तुति॥दधिर्श
खंतुषादानंशीरोदानंनविद्यते॥नमामिशशिदेवेनसंभुमकुटभुषणां॥ ॥थतिधु

वावे
२२

नकावथातभुसमर्जनथेपुजायायेके॥सिन्धुपञ्चमकास्वानहतासमैवेदसमस्तथा
उमयजिमनियोत्तस्वानछोये१२॥स्वानतनेके॥॥यवाकुसुमसंकाशंकाशपेयंम
हाद्युतिं॥नमामिसर्वप्राप्तिचपरागिदिवाकरं॥सूर्यायदेवायनाकसंकांभवसंकाशं
सरागसमप्रभं॥सप्राश्नस्थमारुहं वज्रसूर्यनमाम्यहं॥॥ज्ञाताक्षरा॥भार्गवाणि
वीदविसर्जनहृन्नेभत्यादि॥॥द्विष्टागुह्यपुजा॥मराठनखुमिसचयेकनछोये॥॥

हृत्कंसिहमूलनवहोये॥इदंनवानावनाथासहायकोछोये॥थानगरोशयाके
देकेछोये॥थनेलिसेसकनशपूजायातसांज्यमयासांज्य॥कुमारिपुजायायेगुह्य
मराठनदेनेसिहनेयमहनिफया॥त्रिसमाधियायेथापिपुजादेवपुजापरिक्रमया
ये॥येधर्मात्यादि॥अकालोमुखत्यादि॥पिथादिपूजाधामराठथिकेकिवन
नेशताक्षर॥आसिर्वादिविसर्जनसंगंतयमहनिछोयेकुमारिपुजाछोयेसिंहतिथे॥

वाचे.
२३

दक्षिणा॥ देगुसमये समयाचक्रमयातसाधोसंगवि येगगाचक्रमायेष्वाप्तवजी १२ तयेके १२
जिनियोतकलंखछोयेमुम्वातछपोजकछोयांगाकथुतिधनकावनसलानयेमुखधुद्धि॥॥
इतिवाधातयप्रायचिन्नफेनेगविधिसमाप्तं शुभम्॥ ॥ ॥ ॥
हापांवाधातयमविचार्यानावृतयमागुचोप्यातया॥ निगपक्षेकेनकर्तयेमजिवा॥ सक्रान्ति
स्थसदाकतयमजिवा॥ आदिवार॥ मंगलवार॥ शुक्रवार॥ शनिवार॥ धन्यगुवार॥ वाधातमे

मजिव॥ फूतसामिसामवा ६१० दयवंवाधातयमाल उपांत॥ रजस्वलाजुययक्क वाधातयेम
धंकरजस्वलाजुलसाधुनुनतयमालहुंविचारयायमुम्वाल मुहुर्नमार्नराजोदिससया
वमभितगुमादानप्रदानयायमाल॥ ॥ आदिताविधवानारी॥ सोमेचेवप्रतिवृता॥ अंगा
रकेभवेद्वेषाधुधेसौग्यवर्द्धनंगोपतिभवेन्दिमान्॥ शुक्लेचपररतभवेत्॥ शनौवंधावि
जानियादोदोनारीरजस्वला॥ ॥ वाधातयेनस्वयेगुशिलक॥ ॥ आदित्यवारयुतमाभा

वा.वे
२४

तलसाविधुवाजुया। सोमवारखुनुवाधातलसाभिन. पतिव्रताजुया। मंगलवारखुनुवाधातल-
सामभिं. वेशपाजुया। बुधवारखुनुवाधातलसाभिन. वधनसुखजुया॥ बृहस्पतिवारखुनु
वाधातलसाभिन। मेलेवनाथासधनवेयेजुया॥ शुक्रवारखुनुवाधातलसाभिमं. तिस्येव
निमेलेवियावछेतसां. मेपिभातदयकि॥ इतिश्वारखुनुवाधातलसामभिं. धुसयां
गर्भसरयुमषुथारीजुयुजलशुभम्। वेनेकेखुनुयाविचारमखुतयखुनुयात्पारवगुल

शुभम्। धालभुहतिंछुपामाला। धालभुसरक्तचन्दनंनंमूर्ययारवातचोयेध्वंपिनेया
हलपलेचोये. ध्वंपिनेयाहलपलेचोये. ध्वंपिनेयाहलपलेचोये. ध्वंपिनेनंयाहलपले
चोयाव. स्थापनायानाव. क्रमकथंस्वानवोयेमानजुला। ध्वंपिनेचातानयेजुला॥ ॥



